# अजायब बानी

मासिक पत्रिका

नवम्बर-2023

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Nov. 2023, Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Nov. 2023

मासिक पत्रिका

# अजायब ✿ बानी

| वर्ष–इक्कीसवां | अंक–सातवां | नवम्बर–2023 |
|---|---|---|

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन मेरे क्यों न सुने | 4 | सच्चा मित्र | 5 |
| गुरु का प्रसाद | 17 | कर्मों की अवधि | 33 |

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकाम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी** सहयोग – **डॉ. सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 260 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

# मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात x 2
क्यों ना सुने गुरु की बात x 2
मन मेरे क्यों ना .....

1 सारा दिन, अहंकार में रहता,
गुरु का सिमरन, तू नहीं रटता x 2
काहे का करे अहंकार,
मन मेरे क्यों ना .....

2 पाँच विषयों में, हर पल खेले,
दिखावे के हैं, हम गुरु के चेले x 2
कुछ तो सोच विचार,
मन मेरे क्यों ना .....

3 बातों में सबसे, बड़ा सतसंगी,
सच में तो है, तू पाखंडी x 2
कभी तो बन मेरा यार,
मन मेरे क्यों ना .....

4 सेवा करे तो, मन की मत से,
मतलब नहीं, तोहे गुरु की संगत से x 2
खुश किसको करे मेरे यार,
मन मेरे क्यों ना .....

5 कबूल गुनाह, अपने गुरु के आगे
डर के जिससे, काल भी भागे x 2
'अजायब', कर कृपाल से प्यार,
मन मेरे क्यों ना .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
सच्चा मित्र
DVD 501 (1)
24 जून 1980 गुरु नानक देव जी की बानी फ्लोरिडा–अमेरिका

## घरि रहु रे मन मुगध इआने।। रामु जपहु अंतरगति धिआने।।

यह बानी श्री गुरु नानक देव जी महाराज की है। आप गुरुमत को बहुत प्यार से खोलकर समझाते हैं कि मालिक ने हमें बाहर निकालकर आंखों के पीछे पर्दा लगा दिया है। जिस तरह किसी को घर से निकालकर दरवाजा बंद कर लेते हैं उसी तरह हम सोते–जागते, चलते–फिरते बाहर ही हैं लेकिन परमात्मा हमारे अंदर बैठा है। जिस तरह दूध के अंदर घी छिपा हुआ है उसी तरह परमात्मा हमारे अंदर छिपा हुआ है। पढ़–पढ़ाई करके भी हम बाहर ही हैं। नाम की कमाई करने से ही पता लगता है कि कण–कण में समाए राम का नाम जपना है।

राम लफ्ज नहीं, राम वह ताकत है जिसने दुनिया की रचना पैदा की है अगर हम सारा दिन रोटी–रोटी करते रहें तो पेट नहीं भरता। इसी तरह राम–राम कहने से राम नहीं मिलता। हमने उस ताकत में जाकर जज्ब होना है जो हमारे अंदर समाई हुई है। कबीर साहब कहते हैंः

*बिन देखे बिन अरस–परस के नाम लिए क्या होए।*
*धन के कहे धनी जे होए निर्धन रहे न कोए।।*

परमात्मा जब भी जीवों को तारता है, अपनी कला या शक्ति किसी इंसान में रखता है। हम इंसान हैं, वह परमात्मा भी इंसान बनकर हमारे बीच में आकर रहता है। हमारे और परमात्मा के दरमियान अगर कोई रुकावट है तो वह हमारा मन ही है। मन काल का एजेंट है और हमारी आत्मा सतपुरुष की अंश है। मन हमेशा ही हमें परमात्मा से दूर ले जाने

की कोशिश करता है। मन कोई छोटी–सी ताकत नहीं है यह भी ब्रह्म का अंश है और अपने घर को भूला हुआ है। महात्मा हमें वह युक्ति बताते हैं जिससे हम मन को इसके घर ले जा सकते हैं।

जैसे हम पागल आदमी को समझा लें, उसका इलाज कर लें तो वह हमारे साथ बहुत प्यार से पेश आता है। जब तक वह पागल है, हमें दुख देता है और खुद भी दुखी होता है। यही हालत हमारे मन की है। मन भी दुनिया के जंगल में, विषय–विकारों में पागल हुआ फिरता है। यह आप भी दुखी है और हमारी आत्मा को भी दुखी करता है। जब इसे सन्तों की शिक्षा के मुताबिक समझाकर इसके घर ब्रह्म में पहुंचा दें और आत्मा को इसके पंजे से आजाद करा दें फिर यह भी सुखी और हम भी सुखी।

**लालच छोडि रचहु अपरंपरि इउ पावहु मुकति दुआरा हे।।**

गुरु साहब कहते हैं, ''आप लालच छोड़ दें, यह बुरी बला है फिर आप परमात्मा को प्राप्त कर लेंगे।'' अगर हम हजार जोड़ते हैं तो लाख जोड़ने की हवस पैदा हो जाती है अगर लाख जोड़ते हैं तो करोड़ जोड़ने की हवस पैदा हो जाती है। इंसान की ख्वाहिशें ही इंसान को कंगाल बनाए रखती हैं। माया न तो किसी के साथ आई है, न साथ जा ही सकती है। लोभी का भरोसा नहीं करना चाहिए, हमने लोभ से बचना है।

**जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै, सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै।।**

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि सतगुरु की भक्ति छोड़ने से यम हमारी तरफ देखता है कि यह मेरा खाज है। परमात्मा सतगुरु को भूलने से हमें दुख और मुसीबतें आ घेरती हैं इसलिए हमें उसे भूलना नहीं चाहिए। अगर कोई सच्चे से **सच्चा मित्र** है तो वह हमारा सतगुरु हैं जिसने हमें नाम दिया है। गुरु साहब कहते हैं:

***पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम।***

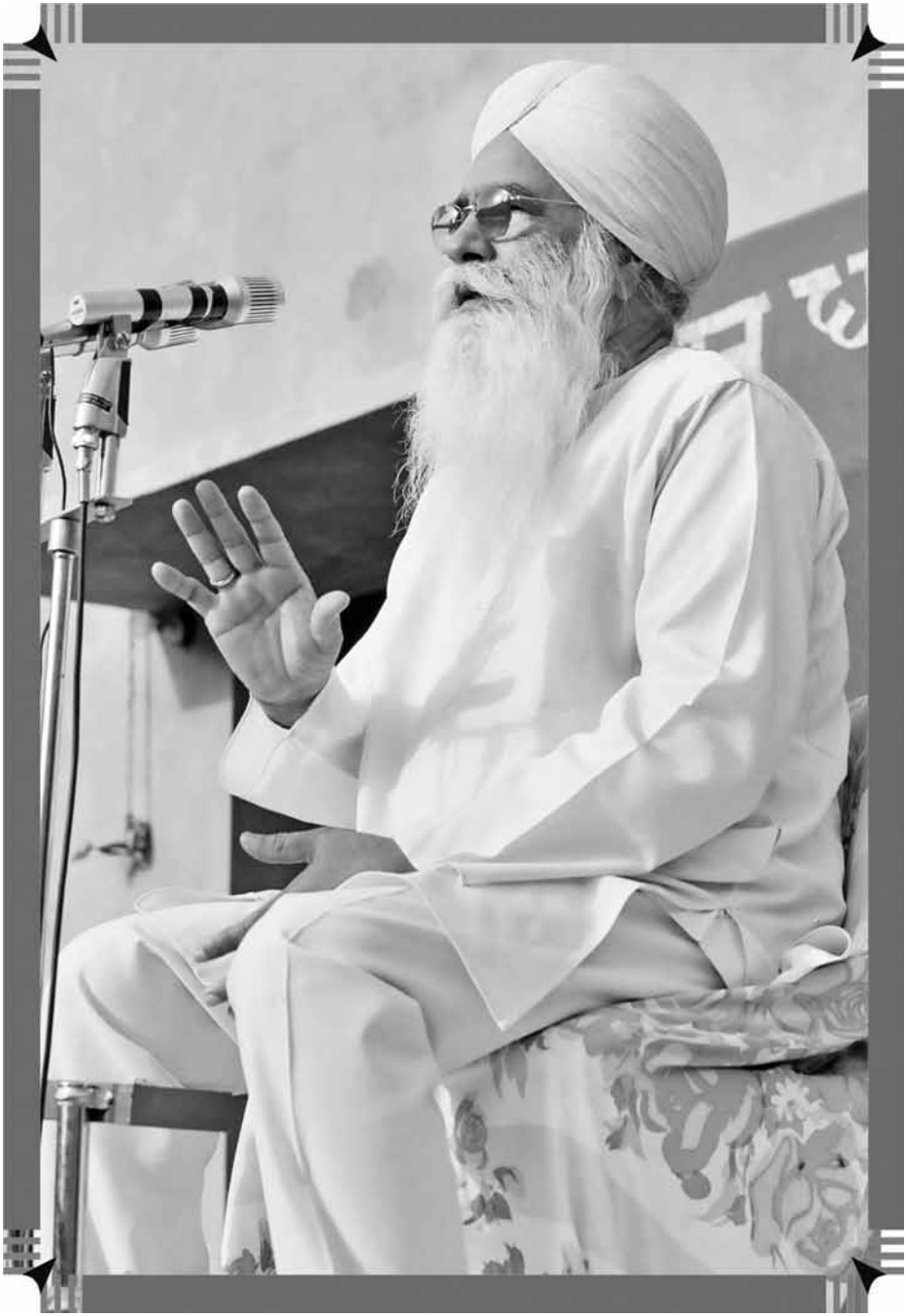

## राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े, एहु परम ततु वीचारा हे।।

आप कहते हैं, ''शब्द–नाम की कमाई करनी है, यही इंसानी जामे का असली मकसद है। परमात्मा ने हमारे ऊपर बहुत दया–मेहर की हमें इंसानी जामा दिया।'' गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

*जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे।*
*इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए।।*
*हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए।*
*मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए।।*

## हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा, गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा।।

सन्त–महात्मा हमें बहुत प्यार से समझाते हैं कि नाम का रस सब रसों से मीठा है, आप अपने अंदर जाकर ही यह रस प्राप्त कर सकते हैं। सहंसदल कमल के अंदर सूक्ष्म शरीर है, त्रिकुटी के शिखर तक कारन है। जब हम सूक्ष्म और कारन दोनों शरीर उतार लेते हैं, अपनी आत्मा को पारब्रह्म में ले जाते हैं, वहां हमारा **सच्चा मित्र** सतगुरु हमें पीने के लिए नाम का रस देते हैं। गुरु साहब बताते हैं:

*अंमृत रसु सतिगुरू चुआइआ। दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ।।*

उस अमृत को पीकर हमारी आत्मा बलवान होती है, इसे सदा की जिंदगी मिल जाती है फिर इसे दुनिया के सब रस फीके लगते हैं और यह दुनिया के रसों में नहीं फँसती। गुरु साहब कहते हैं:

*जब एहु रस आवे तब ओ रस ना भावे।*

लड़कियां गुड्डे–गुड्डियों के साथ तब तक ही खेलती हैं जब तक उनकी शादी नहीं हो जाती। जब शादी हो जाती है फिर उनका दिल पति के चरणों में लग जाता है, फिर कौन गुड्डे–गुड्डियों को संभालकर रखता है। हम विषय–विकारों के रस में तब तक ही फंसे हुए हैं जब तक हम

नाम के रस से दूर हैं। जब हमें 'शब्द–नाम' का रस मिल जाता है तब अपने–आप ही हमारे अंदर से विषय–विकारों के रस निकल जाते हैं।

**अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे।।**

आप कहते हैं, ''शब्द–नाम के साथ जुड़े रहें। शब्द–नाम की कमाई करने से जप–तप, पूजा–पाठ, दान–पुण्य सबका फल मिल जाएगा।''

**राम नामु गुर बचनी बोलहु, संत सभा महि इहु रसु टोलहु।।**

मैं जिस नाम का जिक्र करके आया हूं, हमें वह नाम किताबों में नहीं मिलता। वह रस दुनिया के रसों में नहीं मिलता अगर आपको उस नाम की ख्वाहिश, तड़प और विरह है तो आप सबसे पहले महात्मा की संगत में जाएं। हर तरफ से अपने ख्याल को हटाकर, बहुत प्यार से मन को खाली करके महात्मा के वचन सुनें, फिर उस पर विचार करें। महात्मा के वचन हमारे फायदे के लिए ही होते हैं।'' गुरु साहब कहते हैं:

***परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै।***

**गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे।।**

गुरु साहब कहते हैं कि परमात्मा ने हमें इंसानी जामे का एक मौका दिया है, परमात्मा आपके जिस्म में बैठा है। गुरुमुख आपको वह रास्ता बता सकते हैं, उन्हें मिलकर आप अपने अंदर खोज करें। आप जब गुरुमुखों के बताए रास्ते पर चलेंगे, मन की मत छोड़ेंगे तो जन्म–मरण के दुख से मुक्त हो जाऐंगे, दोबारा माता के गर्भ में नहीं आना पड़ेगा। गुरु साहब गर्भ का दुख बताते हैं:

***मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ।***
***नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ।।***

**सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु, ततु वीचारहु हरि लिव लावहु।।**

अगर कोई सच्चे से सच्चा तीर्थ है तो वह हमारे जिस्म, देह के अंदर ही है। हिन्दुस्तान में आम रिवाज़ है कि जब थोड़े बहुत पैसे इकट्ठे हो जाते हैं तो लोग तीर्थ यात्रा पर जाते हैं कि हमारे पाप बख्शें जाएँगे। हिन्दुस्तान में अड़सठ तीर्थ बहुत मशहूर माने गए हैं।

गुरु नानक देव जी को कुछ वेशधारी साधुओं ने सलाह दी कि आप भी हमारे साथ स्नान करने के लिए तीर्थों पर चलें। गुरु नानक देव जी ने उनसे कहा, ''हमें घर में काम है, आप हमारी यह तूंबी (कड़वा फल) ले जाएं, इसे तीर्थों पर स्नान करवा लाना फिर जब कभी वक़्त मिलेगा हम भी आपके साथ चलेंगे।'' सन्तों की हर बात में राज़ होता है।

वे साधु तीर्थों पर घूमकर वापिस करतारपुर पहुँचे वहाँ गुरु नानक देव जी अपनी खेती–बाड़ी की देखभाल कर रहे थे। साधुओं ने गुरु नानक देव जी को तूंबी देकर कहा कि हम आपकी तूंबी को स्नान करवा लाए हैं। गुरु नानक देव जी ने उस तूंबी की सब्जी बनाकर उन साधुओं के आगे रख दी। जब साधुओं ने उस सब्जी को खाया तो सबने थू–थू करके थूक दिया और कहा, ''महात्मा जी, यह तूंबी तो कड़वी है।''

गुरु नानक देव जी ने उन साधुओं से कहा, ''आपने तूंबी को स्नान नहीं करवाया होगा?'' साधुओं ने जवाब दिया, ''जी, पहले हम तूंबी को स्नान करवाते थे, बाद में हम खुद स्नान करते थे।'' गुरु नानक देव जी ने कहा, ''अफसोस की बात है, यह तो सिर्फ बीजों की कड़वाहट है जो तीर्थों पर स्नान करके नहीं गई। इस इंसानी देह में तो पांच किस्म–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की कड़वाहट है। जब तीर्थ पर नहाने से इन बीजों की जहर नहीं गई तो हमारे अंदर से ये जहर कैसे जा सकती हैं? हमारी देह भी एक तुंबी है।'' गुरु नानक देव जी कहते हैं:

***नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर।***
***इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर।।***

*बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर।*
*साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर।।*

कबीर साहब हमारे भ्रम को निकालते हुए कहते हैं:

*कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु।*
*बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर।।*

चाहे आप गंगा के किनारे घर बना लें, चाहे आप उस तीर्थ का पानी पीने लग जाऐं फिर भी 'शब्द–नाम' के बिना मुक्ति नहीं है।

*जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि।*
*जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि।।*

## अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे।।

अब कहते हैं कि नाम जपने का, गुरु के पास जाने का यह फायदा है कि अंत समय में यम हमें तंग नहीं करेगा। गुरु आएंगे और हमें अपने साथ ले जाएंगे। जो गुरु हमें मौत से नहीं छुड़वा सकता या अंत समय में हमारी आत्मा को लेकर नहीं जा सकता उस गुरु के पास जाकर क्या करना है? ऐसे गुरु को दूर से ही सलाम है। कबीर साहब कहते हैं:

*पीर सोई जो जाने परपीर।*
*जो परपीर ना जाने सो काफिर बेपीर।।*

## सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा, जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा।।

दुनिया में अगर कोई समझदार है, **सच्चा मित्र** है तो वह सतगुरु हैं क्योंकि उसने अपने अंदर परमात्मा–शब्द को प्रकट किया हुआ है।

## जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे।।

सतगुरु समझदार होते हैं, वे 'नाम' देते वक्त कभी भी गलती नहीं करते। उन्हें पता होता है कि इस पर काल का कितना लेखा–जोखा है। वे जिसे नाम देते हैं उसे यम का भय नहीं रहता।

**पंच ततु मिलि काइआ कीनी, तिस महि राम रतनु लै चीनी।।**

अब आप हमारी देह के बारे में समझाते हैं कि यह देह पांच तत्वों की बनी हुई है, एक तत्व दूसरे तत्व का विरोधी है। सिर्फ नाम की कणी होने के कारण ही ये तत्व मिलकर काम करते हैं। जब परमात्मा इसमें से अपने नाम की कणी उठा लेता है फिर मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है। पानी, पानी में मिल जाता है। हवा, हवा में मिल जाती है। अग्नि, अग्नि में मिल जाती है। आकाश, आकाश में जाकर मिल जाता है।

**आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे।।**

हमारी आत्मा परमात्मा में है। परमात्मा आत्मा में है जैसे बीज में पेड़ है और पेड़ में बीज है।

**सत संतोखि रहहु जन भाई, खिमा गहहु सतिगुर सरणाई।।**

आप कहते हैं कि हमारा सतगुरु के पास जाने का यही फायदा है कि हमारे दिल में संतोष होना चाहिए, क्षमा होनी चाहिए और संयम होना चाहिए। हम जो प्रालब्ध लिखवाकर लाए हैं, वह हमें भोगनी ही पड़ेगी। उस प्रालब्ध के मुताबिक ही हमें गरीबी या अमीरी, छोटा कद या ऊंचा कद, हल्का शरीर या भारी शरीर और बीमारी या तंदुरुस्ती ये जरूर मिलेंगे। इसका मतलब यह भी नहीं कि हम पुरुषार्थ करना छोड़ दें, पुरुषार्थ करना इंसान का धर्म है।

मोहम्मद साहब का एक सेवक रोज ऊंटों की रखवाली करता था। एक बार मोहम्मद साहब शिक्षा दे रहे थे कि सब कुछ परमात्मा के हाथ में है, परमात्मा के हुक्म में हो रहा है तो उस सेवक ने कहा, ''जब सब कुछ खुदा–परमात्मा ने ही करना है तो मैं ऊंटों के पैरों में न्योल क्यों लगाऊं?'' मोहम्मद साहब ने कहाः

***उद्यम करेंदया आवे हार ते जाणिएं भाणा करतार।***

तू ऊँटों के पैरों में न्योल भी लगा, ऊँटो की रखवाली भी कर फिर भी कोई चोरी कर लेता है तो तू समझ लेना कि यह परमात्मा के हुक्म में ही था।

एक दिन मैंने हुजूर के सतसंग में देखा कि हुजूर 'शब्द–नाम' की कमाई पर बहुत जोर देते हुए कह रहे थे कि ज्यादा से ज्यादा समय भजन–अभ्यास में लगाना चाहिए। एक बैठक ढाई–तीन घंटे की होनी चाहिए, सब प्रेमी आंखें नीची करके बैठे थे। हुजूर ने एक लफ्ज ऐसा भी कहा कि टाइम जरूर दें बेशक पांच मिनट दें। पांच मिनट के लिए सबने नमस्कार कर दी।

**आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे।।**
**साकत कूड़ कपट महि टेका, अहिनिसि निंदा करहि अनेका।।**

अब गुरु नानक देव जी मनमुखों की हालत बयान करते हैं कि गुरुमुख तो शब्द–नाम की कमाई करके अपनी जिंदगी व्यतीत करते हैं लेकिन मनमुखों में अहंकार होता है, वे निंदा और ईर्ष्या करके अपनी जिंदगी व्यतीत करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

*कथा वार्ता करके सियाने वकत लंघौण।*
*निंदया चुगली चोरी करके साकत वकत गवौण।।*

**बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे।।**

गुरु साहब कहते हैं कि साकत दिन में जागते हुए भी निंदा करता है और रात को सोते हुए भी उसे निंदा के सपने आते हैं। वह चलते–फिरते भी लोगों का बुरा ही सोचता है। आखिर में मौत के बाद धर्मराज उसे नर्क में डाल देता है। गुरु साहब जी कहते हैं:

*निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि।*
*मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि।।*

**साकत जम की काणि न चूकै, जम का डंडु न कबहू मूकै।।**

अब आप कहते हैं, ''साकत यम से बच नहीं सकता, वह जरूर नर्क जाएगा। धर्मराज उसका लेखा–जोखा साथ–साथ बनाए जा रहा है।'' गुरु साहब कहते हैं:

*नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ।*
*ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ।*
*थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काले दोजकि चालिआ।*
*तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ।*
*लिखि नावै धरमु बहालिआ।।*

**बाकी धरम राइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे।।**
**बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ, हउमै करता भवजलि परिआ।।**
**बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे।।**

आप कहते हैं, ''गुरु की शरण के बिना न कोई आज तक तरा है, न तर ही सकता है। जब भी कोई तरा है गुरु की शरण में जाकर, उनका नाम जपकर और उनकी शिक्षा का पालन करके ही तरा है।''

**गुर की दाति न मेटै कोई, जिसु बखसे तिसु तारे सोइ।।**
**जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे।।**

आप कहते हैं,**''जो गुरुमुखों की संगत में आ जाते हैं, उनसे नाम लेकर जप लेते हैं, वे जन्म–मरण के दुखों से हमेशा के लिए बच जाते हैं।''**

**गुर ते भूले आवहु जावहु,जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु।।**
**साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे।।**

आप कहते हैं, ''मनमुख गुरु के पास नहीं जाते, वे कहते हैं कि गुरु के पास जाने की क्या जरूरत है, हम जाने हमारा राम जाने।'' इसलिए जब उन्हें दुख आता है फिर वे उसी परमात्मा का ध्यान करते हैं लेकिन दुखी हुए दास की कौन फरियाद सुन सकता है।

**सुखु दुखु पुरब जनम के कीए, सो जाणै जिनि दातै दीए।।**
**किस कउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा हे।।**
**हउमै ममता करदा आइआ,आसा मनसा बंधि चलाइआ।।**
**मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे।।**
**हरि की भगति करहु जन भाई,अकथु कथहु मनु मनहि समाई।।**
**उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे।।**
**हरि गुर पूरे की ओट पराती, गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती।।**
**नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे।।**

गुरु नानक देव जी ने हमें इस शब्द में बहुत प्यार से समझाया है कि परमात्मा ने हमें मौका बक्शा है तो हम इस इंसानी जामे में आए हैं, हमें इस जामे से पूरा फायदा उठाना है। जो 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं, वे फायदा उठा जाते हैं। जो शब्द–नाम की कमाई नहीं करते धर्मराज उन्हें बार–बार माता के गर्भ में भेजता है, वे जन्म लेते हैं और मरते हैं। जो गुरुमुखों से नामदान प्राप्त करते हैं उनका जन्म–मरण कट जाता है।

आखिर में गुरु साहब यही नसीहत करते हैं कि 'शब्द–नाम' की कमाई करनी है, अपना जीवन सफल बनाना है। यही सबसे अच्छी व उत्तम मत है।

***

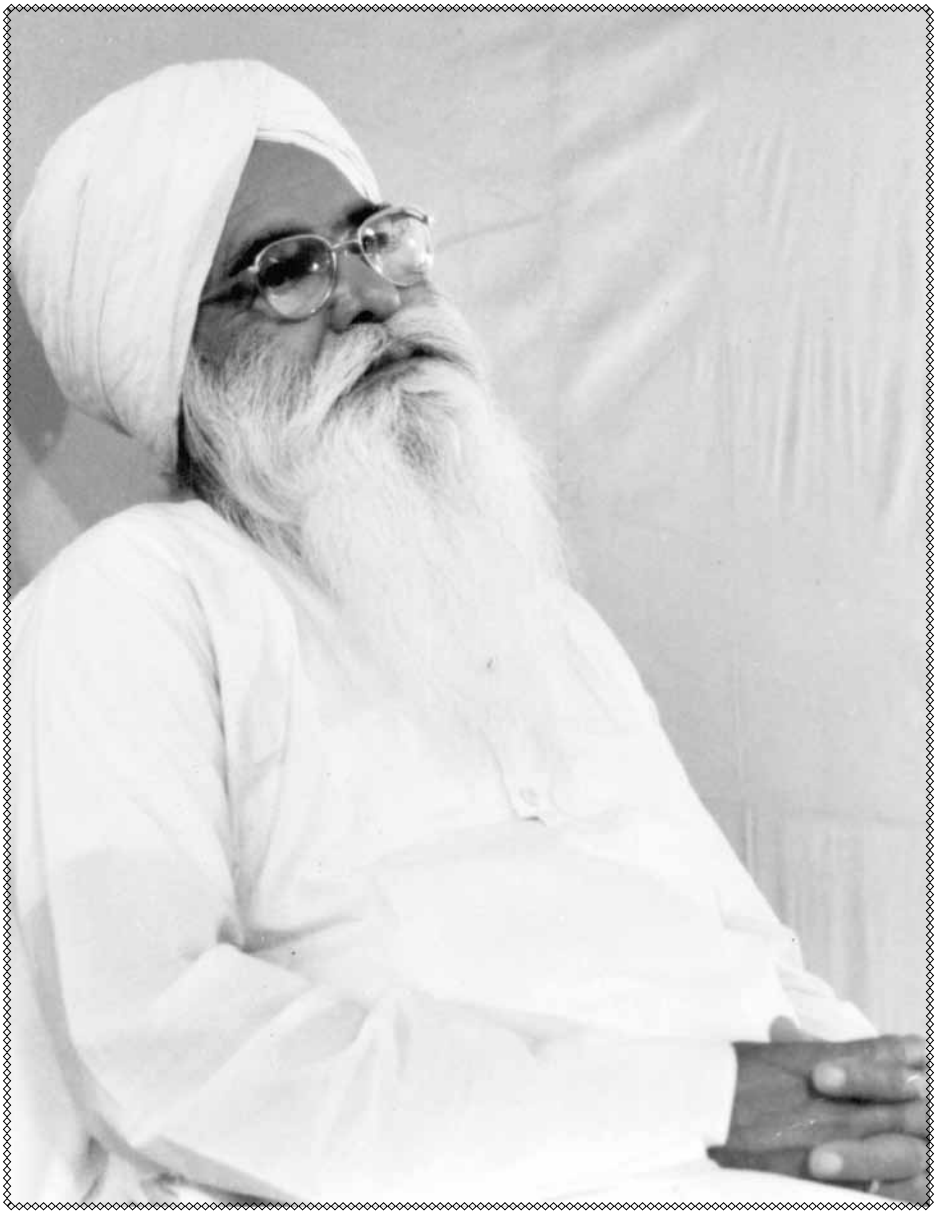

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

# गुरु का प्रसाद

02 अक्टूबर 1982

***एक प्रेमी:*** *– इस दुनिया में जितने भी लोग हैं क्या वे सभी जल्दी से या देर से पूरे गुरु के पास आ जाएंगे?*

**बाबा जी:** – हर आत्मा का वक्त मुकर्रर है।

***एक प्रेमी:*** *– जब हम गुरु के शारीरिक रूप से दूर होते हैं और खाना खाने लगते हैं तो खाना खाने से पहले अगर हम गुरु के स्वरूप को याद करें तो क्या वह खाना जो हम खाने जा रहे होते हैं वह भी वैसा ही प्रसाद बन जाता है जैसा गुरु ने अपने हाथ से बनाया होता है?*

**बाबा जी:** – जब आप गुरु को याद करेंगे तो वह प्रसाद क्यों नहीं बनेगा। आप जैसा ख्याल रखेंगे वैसा ही आपके खाने पर असर पड़ेगा। सच्चाई तो यह है कि सतसंगी को हमेशा ही खाना खाते समय अपने गुरुदेव का ध्यान करना चाहिए बल्कि यह कहना चाहिए कि तूने मुझे खाना दिया है, मैं तेरा दिया हुआ ही खा रहा हूँ, तेरी बहुत दया–मेहर है।

डलहौजी में संगत हाथ जोड़कर आँखें बंद करके बैठी थी, सेवादारों ने सबके आगे खाना रख दिया। महाराज सावन सिंह जी का फुल्का तैयार था। जिस लड़की ने फुल्का तैयार किया था, वह इस इंतजार में थी कि महाराज जी फुल्का खा लें, फुल्का ठंडा हो जाएगा। जब उसने बार–बार हुजूर के आगे विनती की तो हुजूर ने कहा, ''काको, मुझे तो भोग लग रहा है, मुझे तो संगत खाना खिला रही है।'' उस लड़की ने संगत से कहा कि आप लोग ध्यान छोड़कर खाना खाएं और हुजूर को भी खाना खाने दें।

कहने का भाव है कि जब आप गुरु का ध्यान करेंगे कि आपको भोग लगे, आपका शीतल प्रसाद हमें मिले तो उस अन्न का आपके ऊपर बहुत अच्छा असर पड़ेगा, वह एक किस्म का **गुरु का प्रसाद** ही है। शुरु–शुरु में आपको यह मुश्किल महसूस होगा। खाने के समय गुरु का ध्यान करने में नई बात महसूस होगी लेकिन जब आपका यह ख्याल बन जाएगा तो जिस दिन आप अपने गुरुदेव का ध्यान नहीं करेंगे तो आपको खाने में रस नहीं आएगा, फौरन आपको ख्याल आएगा कि आपने मुँह में जो निवाला डाला है वह गुरु का ध्यान किए बिना ही डाला है।

यह मेरी रोज की क्रिया है, आप पप्पू परिवार से पूछ सकते हैं। मैं सबसे पहले अपने गुरुदेव का ध्यान करता हूँ, अपने गुरुदेव का धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझ पर रहमत करके मुझे यह खाना दिया है।

यहाँ भी बलवन्त मेरे लिए खाना तैयार करती है, उसे मेरे पास आए हुए आठ–नौ साल हो गए हैं। जब यह मेरे पास आई तब यह छोटी सी थी। मेरे ख्याल से ऐसा कभी नहीं हुआ होगा कि जब मैंने अपने परमपिता कृपाल का शुक्रगुजार हुए बिना खाना खाया हो। अगर आप भी खाना खाते समय अपने गुरुदेव को भोग लगवाएंगे, उसे **गुरु का प्रसाद** समझकर खाएंगे तो आपके ऊपर इसका बहुत अच्छा असर पड़ेगा।

आपको सिमरन याद आएगा, आप हर एक निवाले के साथ सिमरन करने की कोशिश करें ताकि आपके ऊपर बहुत अच्छा असर हो। अपने गुरुदेव को भोग लगाकर खाएंगे, शीतल प्रसाद समझेंगे तो आप उस खाने को जूठा किस तरह छोड़ सकेंगे, आप उस खाने को बहुत इज्जत के साथ खाएंगे। जो दूसरा आदमी आपके पास बैठा होगा वह भी आपसे सबक सीखेगा कि यह कितनी अच्छी तरह खाना खा रहा है इसने किस तरह बर्तन ही साफ कर दिया है।

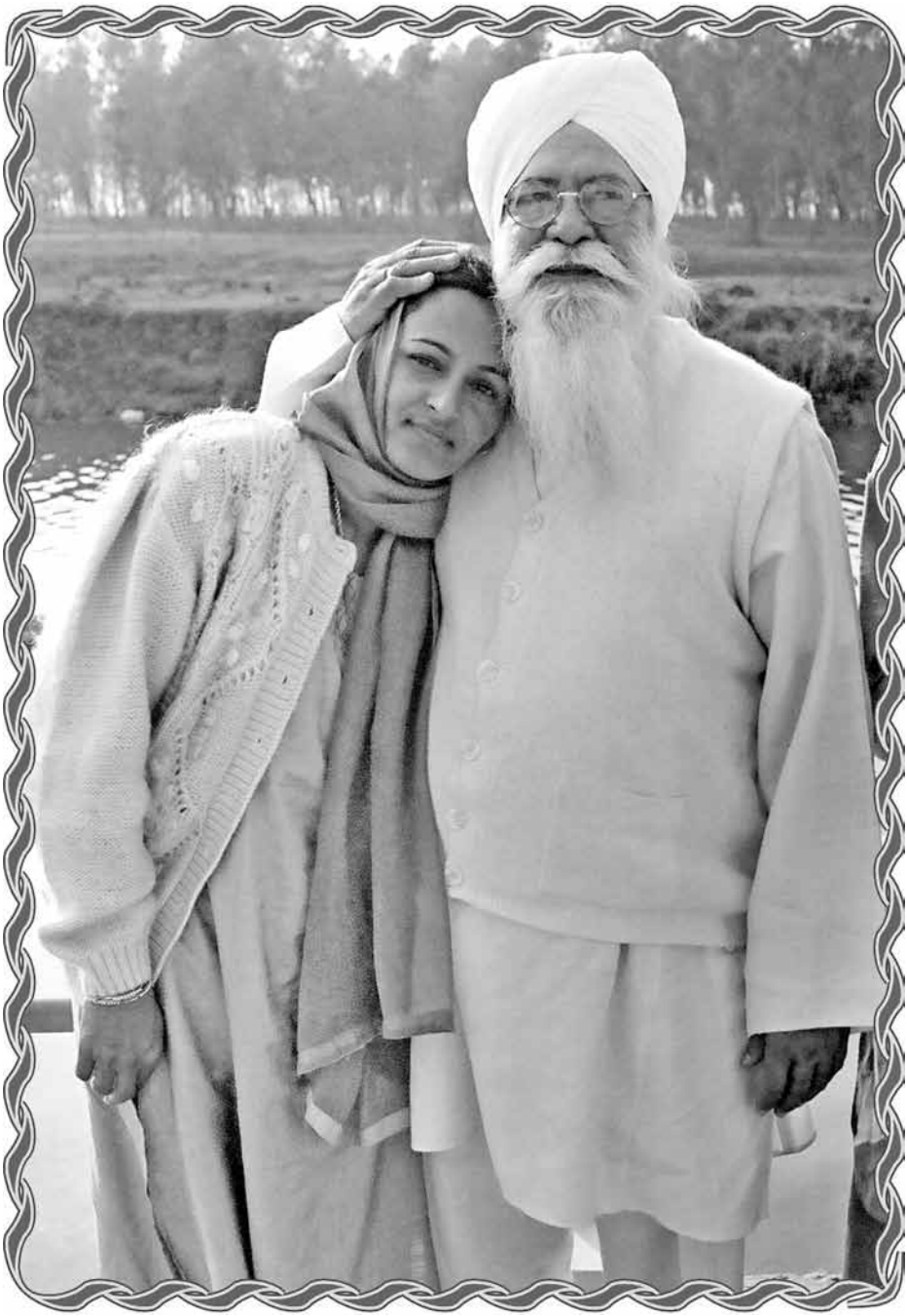

खाना खाते समय आपको यह खास ध्यान रखना चाहिए कि उस समय आपके अंदर गुरु के प्रति ख्याल उठने चाहिए। हर निवाले के साथ सिमरन होना चाहिए। आप कहेंगे हम खाना बना रहे हैं, हम खाना खा रहे हैं, हमने मेहनत करके इसे कमाया है लेकिन जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे कहते हैं, ''तूने ही खाना पकाया है, तूने ही परोसा है, तूने ही खाया है, आगे तूने ही आशिश दी है। गुरु नानक देव जी कहते हैंः

***आपि पकावै आपि परोसे भांडे आपे ही बहि खावे।***
***आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै।***
***आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै।।***

***एक प्रेमीः –*** *मैं जानती हूँ कि गुरु कभी भी हमें अकेला नहीं छोड़ता, हम हमेशा ही गुरु के साथ रहते हैं। बेशक गुरु चोला छोड़ जाए फिर भी गुरु साथ ही रहता है। मैं यह भी जानती हूँ कि आज से कुछ दिनों बाद हम शारीरिक रूप में आपसे अलग हो जाएंगे तो वहाँ पर बिछोड़े का दुख होगा, उसका क्या मतलब है?*

**बाबा जीः –** अगर हम बिछोड़े का दुख महसूस करेंगे तो वह भी मिलाप से कम नहीं है। आप बिछोड़ा भी उसी का महसूस करेंगे जिसके साथ आपका सारी दुनिया और रिश्तेदारों से भी ज्यादा प्यार होगा। वे जीव बड़े ऊँचे भाग्य वाले होते हैं जिन्हें गुरु का बिछोड़ा याद रहता है।

***एक प्रेमीः –*** *कल सतसंग में जब आप अपने गुरु के साथ बिछोड़े का दुख बता रहे थे तब आपने आखिर में आशिकी वाला कुछ कहा था। उसमें जब आपने अपना नाम लिया तब आपकी आवाज तबदील हो गई और ऐसा महसूस हुआ कि जितना भी दुख था वह उस एक वाक्य के अंदर आ गया। हमें यह भी महसूस हुआ कि गुरु के बिछोड़े का जो दुख आपके अंदर है, उस दुख को आप ही जान सकते हैं।*

**बाबा जीः –** मैं हमेशा ही कहा करता हूँः

*मेरे जिड्डा होवे दुखी ओसनूं सुणावां दुख।*
*सदा सुखी रहे ओनू दुख दी पछाण की।*
*खुसरे की जांण दे ने मैथन दे स्वाद ताईं।*
*हाफिजां विचारेया ने पढ़ना कुरान की।*
*तेरे नाल बीतदी तू जाणदा अजायब सिंह।*
*गुरु छड जाए संसार ऐदो उत्ते मर जाणा की।*
*काफ कदर विछोड़े दी ओ जाणे, जेड़ा विछड़े अपने यार कोलों।*
*तंदरुस्त नूं सार की दुखड़े दी, दुख पुछिऐ किसी बीमार कोलों।।*

गुरु के दर्शनों से पाप कट जाते हैं, जब गुरु संसार छोड़ जाता है तो शिष्य गुरु के दर्शन नहीं कर सकता। हमें पता ही है कि जिसके अंदर गुरु प्रकट हो जाता है वह हमारे हर सवाल का जवाब देगा, हमारे साथ हमारे गुरु जितनी हमदर्दी रखेगा। हमारा आदर–सत्कार भी करेगा लेकिन हम शारीरिक दर्शनों से हमेशा के लिए वंचित रह जाते हैं।

***एक प्रेमी:*** *– मैंने एक किताब में पढ़ा है कि जब बाबा सावन सिंह जी ने चोला छोड़ा तो उनके कई सेवकों ने आत्महत्या कर ली। मैं जानना चाहती हूँ कि उन आत्माओं के साथ क्या हुआ?*

**बाबा जी:** – महाराज सावन सिंह जी हमेशा ही आत्महत्या के खिलाफ थे। वे कहा करते थे कि आत्महत्या करने वाले को गुरु उल्टा लटका देता है।

***एक प्रेमी:*** *– कल आपने सतसंग में ऐसी बात कही जो मुझे समझ नहीं आई क्योंकि सतसंग में आपने कहा था कि लोग गुरु से छल–कपट करते हैं। इसलिए मैंने पप्पू से पूछा तो उसने बताया कि कई बार लोग गुरु के सामने रोते हैं, वैराग्य दिखाते हैं लेकिन जब वे गुरु से दूर हो जाते हैं तो बुरे कर्म करने शुरु कर देते हैं। इस तरह वे गुरु के सामने रोकर या आँसू बहाकर ये बताने की कोशिश करते हैं कि वे बहुत श्रद्धा से भक्ति कर रहे हैं। जब मैंने यह सुना तो मेरे लिए बहुत मुश्किल हुआ*

*क्योंकि मेरी भी यही हालत थी। मैं जब आपसे दूर होता हूँ तो मैं भी ऐसे ही करता हूँ। मैं कई बार सन्तमत से दूर चला गया और मैंने बहुत बुरे कर्म किए। मैंने धूम्रपान किया, कई बार नशीली चीजों का सेवन भी किया। कई बार लोगों के साथ व्याभिचार किया इसलिए मैं सबके सामने आपसे यह विनती करता हूँ कि आप मुझे क्षमा करें और मुझे कभी भी अपने से दूर न करें क्योंकि मैं यह नहीं चाहता कि मैं इस तरह के कर्म करके नर्क में या उससे भी किसी बुरी जगह जाऊं?*

**बाबा जी**: – बहुत प्यारे, सतसंग सुनने का यही फायदा है। हमारे अंदर जो बुराईयां हैं, सन्त–महात्मा उन्हें कहानी के जरिए बता देते हैं कि आपने इन कमजोरियों से बचना है। महाराज सावन सिंह जी के एक नामलेवा से गलती हुई, उसने मुँह काला करके जूतों का हार गले में डाल लिया। महाराज सावन सिंह जी सतसंग करके उठे तो वह उठकर कहने लगा, ''मुझे माफ कर दें।''

महाराज जी ने कहा कि एक औरत ने एक बकरा और एक बंदर रखा हुआ था। औरत ने खाना तैयार किया उसके दिल में ख्याल आया कि मैं दही लेकर आऊं। वह बाजार से दही लेने के लिए चली गई। बंदर चालाक था उसने तैयार किया हुआ सारा खाना खा लिया, दूध भी पी लिया। उसके बाद बंदर ने बकरे के गले से रस्सा निकालकर अपने गले में रस्सा डाल लिया और बकरे के मुँह पर थोड़ा बहुत खाना लगा दिया ताकि देखने वाला कह सके कि जो कुछ खाया है, बकरे ने ही खाया है।

औरत बाहर से आई तो सब कुछ देखकर उसने डंडे से बकरे को खूब मारा। कोई आदमी यह शैतानी देख रहा था, बंदर मौज से बैठा था। उस आदमी ने कहा कि इस बेचारे बकरे का क्या दोष है? कसूर तो उस भले मानस का है जो बैठकर तमाशा देख रहा है।

महाराज सावन सिंह जी ने कहा कसूर तो मन का है और बदनाम तन को करता है। आराम से बैठ जा, आगे गलती मत करना। कहने का भाव संगत के अंदर मन का पाज खोलना अच्छी बात है ताकि आगे के लिए मन को पता लगे कि मैंने चालाकी की तो इसने भी मेरे आगे हार नहीं मानी बल्कि सारी संगत के सामने मेरी पोल खोल दी। साथ ही यह भी हिदायत है कि आगे के लिए होशियार रहना है। कबीर साहब ने मन को चंचल घोड़ा कहा है, इसे सिमरन की लगाम लगाकर रखनी है।

याद रखें, हम मन के ऐबों के ऊपर जितना पर्दा डालेंगे यह मन उतना ही मजबूत होकर ज्यादा ऐब करेगा। मन होशियार हो जाता है कि यह किसी के सामने मेरी बात नहीं करता, अब यह मेरा दास हो गया है अगर मन को यह पता चल जाए कि अब यह मेरे वश में नहीं, मेरी बेइज्जती करेगा तो मन काफी हद तक सुधर जाता है।

याद रखें, सतसंगी को ऐब करते हुए कभी भी यह नहीं भूलना चाहिए कि हमें कोई देख नहीं रहा। सतगुरु 'शब्द–रूप' होकर आपके अंदर बैठा है, वह देख रहा होता है। महाराज कृपाल कहा करते थे कि सन्त पर्दापोश होते हैं, उन्होंने डोर जरूर ढीली छोड़ी होती है कि यह समझ जाएगा। हमें हमेशा ही अपने गुरुदेव को हाजिर–नाजिर समझना चाहिए क्योंकि गुरु हमारी हर हरकत को देख रहा है। कबीर साहब कहते हैंः

***किए पाप रखे तले दृढ़ाए, प्रगट भए नादान जब पूछे धर्मराय।***

याद रखें, कुदरती कानून को चेलेंज नहीं किया जा सकता, कुदरती कानून किसी का लिहाज नहीं करता। वह हर एक का लेखा–जोखा करता है। जब हम दान–पुण्य करते हैं, नेक कर्म करते हैं तो हम चर्च या मंदिर में जाते हैं, इश्तिहारों में अपना नाम निकलवाते हैं कि हमनें इतना दान किया है लेकिन जब किसी ने पाप करना होता है तो बाप, बेटा बैठकर सलाह नहीं करते जिसका मौका लगता है वह पाप कर लेता है।

आपको पता ही है कि हम इस संसार में पुण्यों का इनाम भोग रहे हैं और पापों की सजा भी भोग रहे हैं। पुण्यों का इनाम अच्छे घर पैदा होना, अच्छा दिमाग होना, तंदरूस्ती होना, अच्छे ख्याल होना है। पापों की सजा ज्यादा बीमारियां होना, गरीबी का होना, दिमाग ठीक न होना, लूले–लंगड़े होना है। यह तो स्थूल दुनिया है अगर अंदर जाकर देखें तो काल ने बड़े–बड़े नर्क रचे हुए हैं, वहां मलीन आत्माओं को बहुत सजाएं दी जा रही हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

***पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ।***
***नानक जिउ मथनि मधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ।।***

मैं आपको अपना एक चश्मदीद वाक्या बताता हूँ जो इस तरह है कि आज से पैंतिस साल पहले अमृतसर के पास जी.टी.रोड पर एक्सीडेंट हुआ कि एक ट्रक तीन–चार गड्ढों में जाकर लगा, उन गड्ढों को ऊँट खींच रहे थे। तीन ऊँट मर गए, एक ऊँट की टाँगे टूट गई। बंदो की तो संभाल कर ली लेकिन जो ऊँट मर गए वे वहीं पड़े थे उनमें से एक ऊँट जिंदा था। उस ऊँट की किसी ने भी देखभाल नहीं की, मालिक उसे उसी तरह वहीं पर छोड़कर चले गए।

सोचकर देखें, उस जामें में वह ऊँट किस अदालत में जाकर फरियाद कर सकता था कि कोई मेरा इलाज करवाए। हमने उस ऊँट की दर्दभरी मौत देखी है। वह जिंदा था, कौए उस जिंदा ऊँट की आँखें निकालने की कोशिश कर रहे थे, उसके हाथ नहीं थे कि वह कौवों को हटा सके। बस या ट्रक से निकलने वाला आदमी उस ऊँट की हालत को देखकर भगवान को याद करता था कि देखो भई,बुरे कर्मों की सजा।

आप सोचकर देखें, इंसान का जामा तो उसे भी मिला होगा, हो सकता है वह हमसे भी अच्छा हो लेकिन इंसान के जामें में बुरे कर्म

किए, नाम की कमाई नहीं की, ऊँट के जामें में आया। ऐक्सीडेंट हुआ, जब तक काम का था मालिकों ने उससे काम लिया लेकिन जब काम का नहीं रहा तो किसी ने भी उसकी देखभाल नहीं की। उसे उसी तरह सड़क पर छोड़ गए। वह अदालत में कोई दरखास्त नहीं कर सकता था कि किस तरह कौवों ने उसकी आँखे निकाली और वह तड़पकर मरा।

आपने सिक्ख इतिहास पढ़ा होगा। बाबा बंदा बहादुर, गुरु गोबिंद सिंह का चोटी का सिक्ख हुआ है। वह कश्मीर के पुंछ इलाके का था शिकार खेलता था। एक दिन शिकार करते हुए उसने एक हिरनी को मारा। हिरनी के पेट में बच्चा था जब उसने उस बच्चे को तड़पता हुआ देखा तो उसके दिल को चोट लगी कि ओह! मैंने कितना बड़ा जुल्म किया है। यह देखकर उसने नाम प्राप्त किया। बंदा बहादुर ने गुरु गोबिंद सिंह जी की शरण में जाकर उनके हुक्मों का पालन किया।

***एक प्रेमी:*** *– मेरा पति अष्टांग योग करता है इस वजह से उसे अंतरी ज्योत और नाद का अनुभव प्राप्त है। मेरा सवाल यह है क्या काल इस तरह से ज्योत और नाद का अनुभव देकर आत्माओं को पथ भ्रष्ट कर सकता है अगर कर सकता है तो अकाल पुरख ने काल को इतनी ताकत क्यों दी?*

**बाबा जी:** – आप अंदर जाकर ही यह सवाल करें कि उसे इतनी ताकत क्यों दी है? जहां तक ज्योत और नाद का अनुभव है काल ने भी अंदर मिलती–जुलती आवाजें रखी हैं, ज्योत रखी है। वह निचले चक्रों की आवाज होती है, निचले मंडलों की ज्योत होती है।

शुरु–शुरु में मैं इस ज्योत पर मस्त रहता था कि हर जगह ज्योत और नाद का जिक्र है, यह ज्योत मुझे दिखाई देती है। जब बाबा बिशनदास जी के पास गए तो उन्होंने बताया कि बेटा, यह निचले चक्रों

की ज्योत है जो तुझे दिखाई देती है, यह तुझे धोखा देती है। असली ज्योत कोई और है लेकिन मुझे भी उस ज्योत का पता नहीं।

जब परमपिता कृपाल के चरणों में गए फिर पता लगा कि सतपुरुष की ज्योत या सतपुरुष की आवाज कौन सी है। पूरा गुरु नामदान के वक्त सतपुरुष की ज्योत और शब्द का अनुभव करवाता है। जहां से सन्तों की अलिफ–बे शुरु होती है वहां जाकर ये सारे खत्म हो जाते हैं उनकी यह आखिरी मंजिल होती है।

***एक प्रेमी:*** *– पिछली बातचीत में आखिरी सवाल यह था कि मैंने नाम तो महाराज जी से लिया है लेकिन मैं आपसे और बाबा सावन सिंह जी से ज्यादा प्रेरणा महसूस करता हूँ। आपका जवाब यह था ध्यान अपने गुरु का करना चाहिए। मेरे जैसे और भी कई लोग हैं जिन्होंने महाराज कृपाल के दर्शन नहीं किए उन लोगों के लिए यह बहुत मुश्किल है कि वे अपने आपको महाराज कृपाल के प्रति श्रद्धालु बनाएं क्योंकि उन्होंने उन्हें कभी देखा ही नहीं। हमने आपको देखा है इसलिए हमारी श्रद्धा आप पर ज्यादा है। मेरी समझ में आता है अगर हमारी श्रद्धा प्यार आपके लिए है और आपके प्रति श्रद्धालु रहने से हमारी श्रद्धा महाराज जी के प्रति भी बनती है इसके बारे में आप कुछ बताएं?*

**बाबा जी:** – हाँ भई, हर सतसंगी को प्रेम–प्यार से सुनना और अमल करना चाहिए। आप कभी यह न सोचे कि हमें प्रतिनिधि के द्वारा नाम मिला है, हमने महाराज जी को शारीरिक रूप में नहीं देखा। यह एक सच्चाई है कि गुरु ने तो आपको देखा है, वह आपके अंदर बैठा है, वह तो आपकी आत्मा को समझता है। अगर आपको मुझसे प्यार है, मुझ पर श्रद्धा है तो मेरा कहना मानें। मेरा यही कहना है:

***ज्योत ओह है जुगत ओह है, स्यों काया विच पलटिए।***

जिस स्वरूप द्वारा नाम दिया जाता है हमारे अंदर वही स्वरूप प्रकट होगा, वही हमारी अगुवाही करेगा। आपका मुझसे प्यार है, मेरा भी आपके साथ अटूट प्यार है। मैं आपको प्यार से यही सलाह देता हूँ कि आप उसी स्वरूप का ध्यान करें जिस स्वरूप में आपको नामदान मिला है। सच्चाई तो यह है कि जब आप प्यार और श्रद्धा से उसके उत्तराधिकारी को मानते हैं, जब श्रद्धा से उसके आगे जाकर बैठेंगे, जिस स्वरुप के द्वारा नाम दिया गया है उसका ध्यान करेंगे आगे आपको वही स्वरूप नजर आएगा। महात्मा कोई करामात नहीं दिखा रहे होते क्योंकि वे उनका ही स्वरूप बनकर बैठे होते हैं, उनमें वही ताकत प्रकट होती है।

मैं सिक्ख परिवार में पैदा हुआ, गुरु गोबिंद सिंह जी का उपासक था। हम जानते हैं जो जिस परिवार में पैदा होता है, घर में जो कर्मकांड करते हैं वही कर्मकांड बच्चे भी करते हैं। बेशक मैंने गुरु गोबिंद सिंह जी के दर्शन नहीं किए थे लेकिन मुझे यह पता था कि उनके कलगी लगी होती है, उनके पास तीर है और चक्र वगैरह लगा है। मैं इस चीज का बहुत उपासक था।

जब बाबा सावन सिंह जी के चरणों में गए तो मन ने फौरन कहा इस महात्मा को तब मानेंगे अगर ये गुरु गोबिंद सिंह जी की तरह दर्शन दें। बस! थोड़ी देर बैठे, आगे मुझे वैसा ही अनुभव हुआ जिस चीज को मैं मानता था।

मुझे महाराज सावन सिंह जी से मिलने का मौका मिलता रहता था क्योंकि हमारी पलटन ब्यास डेरे के पास रहती थी। जब एक दिन उनसे यह सवाल पूछा कि हमने इस तरह का अनुभव किया कि आपकी पगड़ी के ऊपर कलगी और चक्र लगे हुए हैं। महाराज जी ने हँसकर कहाः

***जिन्हं के रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी।***

हाँ भाई, आपकी जैसी भावना थी अगर आप वही श्रद्धा किसी पर करते हैं और वह वही ताकत है तो वह आपकी श्रद्धा पूरी करता है। याद रखें, अगर सारी जिंदगी एक महात्मा का ही ध्यान बन जाए तो यह अच्छा है। आपने अपना ध्यान नहीं बदलना। जिन्हें परमपिता कृपाल से नाम मिला है उन्होंने ध्यान उनका ही करना है। अगर आपके अंदर कोई रूकावट है, कोई शक है तो आप मुझसे पूछ सकते हैं, मैं आपकी सेवा करने के लिए तैयार हूँ।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि जब बाबा जयमल सिंह जी चोला छोड़ गए तो उस समय मैं आगरा जाया करता था। मेरा स्वामी जी महाराज के भाई के साथ बहुत प्यार था। मैं ध्यान तो अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी का करता था लेकिन स्वामी जी के भाई नाराज नहीं होते थे कि ये अपने गुरु का ध्यान क्यों करता है। प्यार सारी जिंदगी एक ही महात्मा के साथ, एक ही स्वरूप के साथ कर सकते हैं अगर वह भी बन जाए। उत्तराधिकारी इससे नाराज नहीं होता बल्कि वह इसमें आपकी मदद करेगा।

ध्यान तबदील नहीं करना, वह आपके अंदर है। मैंने बहुत प्यार से आपको सलाह दी है अगर आपके अंदर कोई रूकावट है, कोई शक है तो बिना झिझक आप मुझसे पूछ सकते हैं, मैं आपकी सेवा करूंगा।

***एक प्रेमी:*** *– सिमरन कब करना चाहिए और कब नहीं करना चाहिए इसके बारे में काफी गलतफहमियां हैं? हमें यह बताया गया है कि हमेशा ही सिमरन करते रहना चाहिए लेकिन साथ में यह भी कहा गया है कि जब हम भजन करने के लिए बैठते हैं, आवाज सुनने के लिए बैठते हैं तब हमें सिमरन नहीं करना चाहिए। जब हम हमेशा ही सिमरन करते हैं तो भजन के समय सिमरन कैसे नहीं कर सकते?*

**बाबा जीः –** हाँ भई, मैंने इस सवाल का बहुत बार स्पष्ट जवाब दिया है लेकिन फिर भी हम इसे समझ नहीं रहे। नामदान के समय बताया जाता है कि एक समय में आप एक ही काम कर सकते हैं। आप सिमरन करें, जब मन शान्त हो जाता है, ज्योत थिर हो जाती है तब आप सिमरन छोड़कर भजन की पोजिशन में बैठ जाएं और शब्द को सुनें।

जब हम तन की जुबान से सिमरन के ऊपर तरक्की कर मन की जुबान से सिमरन करते हैं फिर हमें न तो सिमरन रोकने की जरूरत पड़ती है और न हमें सिमरन करने की जरूरत पड़ती है। जिस तरह हमारे अंदर दुनिया के ख्याल ऑटोमेटिक ही चलते रहते हैं, दुनिया के ख्यालों के वक्त कौन सा हम जुबान हिलाते हैं या उन ख्यालों को हटाते हैं वे अपने आप ही हमारे अंदर चलते रहते हैं। अगर हमारा सिमरन इस तरह का बन जाता है तो किसी भी वक्त न हमारा सिमरन रूकेगा, न चालू होगा वह तो अपने आप ही आपके अंदर चलता रहेगा। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

***सासि सासि सिमरहु गोबिंद, मन अंतर की उतरै चिंद।।***

जब साँस ऊपर जाता है तब भी सिमरन, जब साँस नीचे आता है तब भी सिमरन। जैसे आप साँस नहीं रोक सकते फिर आप सिमरन को भी नहीं रोक सकेंगे। जब सिमरन की ऐसी हालत हो जाती है तो बैठते ही फौरन 'शब्द' हमारी आत्मा को ऊपर खींच लेगा।

सतसंगियों को अपने दिल के अंदर झाँककर देख लेना चाहिए कि हम कई–कई घंटे सिमरन छोड़े रखते हैं। जब हम अभ्यास में बैठते हैं उस समय सिमरन करते हैं, आप उस समय अच्छी तरह मन की चौकीदारी करके देखें कि यह एक घंटे में आपसे कितनी बार सिमरन छुड़वाएगा, दुनिया के ख्याल लाएगा कभी कर लिया, कभी हट गया।

इसलिए सन्त कहते हैं कि आप एक वक्त में एक ही काम कर सकते हैं। 'शब्द' सुनने के समय आप सिमरन की तरफ ध्यान न दें, शब्द की तरफ तवज्जो दें। सन्तों का मकसद है कि आप साँस–साँस के साथ सिमरन करें अगर हमारा सिमरन पक जाता है तो हम जब भी चौंकड़ी लगाकर बैठेंगे 'शब्द' हमारे अंदर अपने आप ही चालू हो जाएगा।

***एक प्रेमी**: – मेरा उत्साह भंग हो गया है, आज हमारा यहां पर एक ही दिन रह गया है। मैं जब भी अभ्यास के लिए बैठती हूँ सिमरन के बीच अगर थोड़ी सी भी जगह है तो मेरा मन आ जाता है, यह मन मुझे बहुत परेशान कर रहा है। पहले तो मेरा मन बहुत शान्त हो गया था लेकिन कल से मन पागल हो रहा है बेशक मैं अपने मन को बोलूं कि तू अभी चला जा, मैं तुझसे बाद में बात करूंगी फिर भी मन मेरा पीछा नहीं छोड़ता। अभ्यास में बहुत परेशानी पैदा कर रहा है। मुझसे कोई बहुत बड़ी गलती हो गई है या मैंने आपको नाखुश कर दिया है जिस वजह से मेरी यह हालत हो गई है?*

**बाबा जी**: – मैं बताया करता हूँ कि हार जाना उतना बुरा नहीं होता जितना हार मान लेना बुरा है। मन जितना मजबूत होकर हमला करता है आप उतने ही मजबूत होकर उसके ऊपर सिमरन का हमला करें। क्या दुश्मन के आगे हथियार फैंककर कोई आदमी कामयाब हो सकता है? हमारा दुश्मन, हमारा मन है आप मजबूत बनें।

***एक प्रेमी**: – कई बार अभ्यास के वक्त ऐसा होता है कि मुझे नींद आ जाती है, जब मैं उठता हूँ तो बहुत थकावट महसूस करता हूँ। कई बार ऐसा होता है कि अचेतन अवस्था आ जाती है जिसके अंदर न तो मैं सोया होता हूँ, न मुझे पता होता है कि मैं कहां हूँ। जब मैं उस अवस्था से जागृत होता हूँ तो मैं बहुत ही ताजगी महसूस करता हूँ मेरा सवाल*

*यह है क्या कभी ऐसा भी होता है कि आत्मा ऊपर के मंडलों में चली जाती है और मन को पता नहीं होता कि आत्मा ऊपर चली गई है? क्या हमारी जानकारी के बिना आत्मा ऊपर जाकर आनन्द उठा सकती है?*

**बाबा जी**: – प्यारेयो, त्रिकुटी तक मन साथ जाता है। मन इतना सुस्त, ढीला और इतना कमजोर नहीं जिसे यह पता न लगे कि आत्मा ऊपर चली गई है। त्रिकुटी तक यह पूरा मुकाबला करता है, वकील की तरह रोकता है और कहता है कि ऊपर जाकर क्या लेना है? पहली बात तो यह है कि मन आत्मा को अंदर जाने ही नहीं देता, बाहर ही बाहर रखने की कोशिश करता है। जिन सतसंगियों का संघर्ष होता है उन्हें पता ही है कि मन किस तरह बाहरमुखी होकर भटकाता है। कभी काम, कभी क्रोध, कभी लोभ, कभी मोह तो कभी अंहकार को आगे करता है।

***एक प्रेमी***: – *एक बार टूर के दौरान मेरे साथ ऐसी घटना हुई कि मैं एक सतसंगी के साथ यात्रा कर रही थी। एक बिल्ली पर हमारी गाड़ी चढ़ गई और वह बिल्ली तकरीबन मर गई ऐसी हालत में हम उसकी मदद भी नहीं कर सकते हाँलाकि उस सतसंगी ने कहा कि इसको यहीं छोड़ देते हैं ताकि यह अपने कर्म भुगत ले। महाराज कृपाल ने एक कहानी सुनाई थी जिसमें जानवर अपने कर्म भुगतकर ही खत्म होते हैं। मेरा सवाल है अगर कभी ऐसी घटना हो तो उस जानवर की मदद करने की कोशिश करनी चाहिए या उसे अपने कर्म भुगतने के लिए वहीं छोड़ देना चाहिए?*

**बाबा जी**: – महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि बाल की खाल निकालने से कुछ खास प्राप्त नहीं होता। अगर हम किसी की मदद करते हैं तो कोई बुरी बात नहीं अगर हम सारा दिन इसी तरह करते रहें तो हमारे जीवन का निर्वाह भी नहीं हो सकता।

***

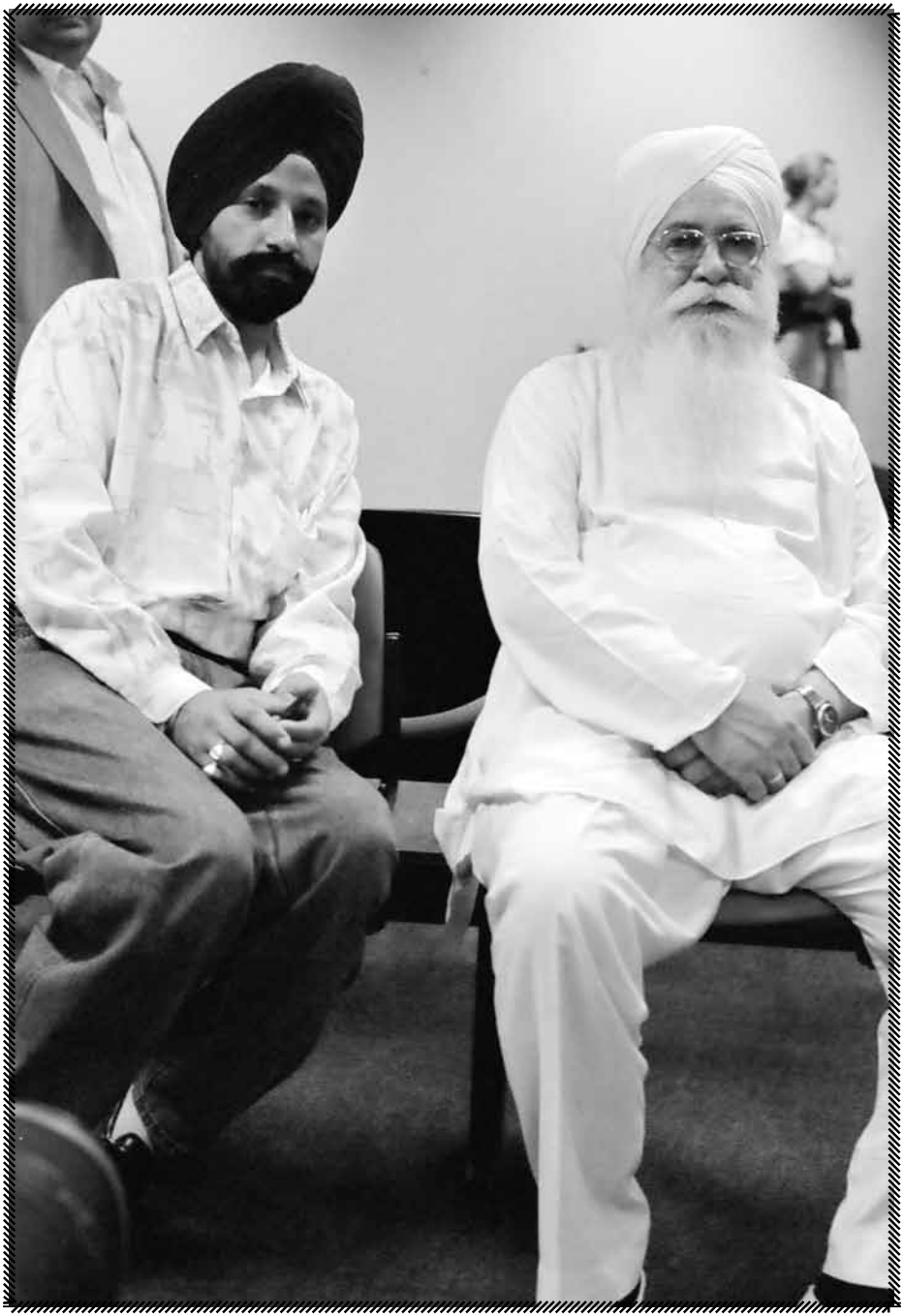

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

# कर्मों की अवधि

आर्युवेद के अंदर जहां बूटियों का वर्णन किया गया है, वहां एक छोटी सी मशहूर कहानी दी गई है। वह कहानी इस तरह है कि गोरखनाथ अच्छी कमाई वाले साधु थे, उनके सिर पर एक फोड़ा था। गोरखनाथ ने उस फोड़े का बहुत इलाज करवाया लेकिन वह फोड़ा बढ़ता ही गया ठीक नहीं हुआ। गोरखनाथ ने बारह साल तक उस फोड़े का कष्ट भोगा, वे यह भी जानते थे कि फोड़ा उनके किसी बुरे कर्म का फल है। बारह साल बाद उस फोड़े के **कर्मों की अवधि** पूरी हो गई।

गोरखनाथ जहां बैठकर तप करते थे, उसके नजदीक एक बूटी लगी हुई थी वह बूटी बोली, ''गोरखनाथ, आप मुझे रगड़कर इस फोड़े के ऊपर लगा लें, मैं आपको ठीक कर दूँगी।'' गोरखनाथ को कर्मों की फिलोस्फी का ज्ञान था तो उन्होंने उस बूटी से कहा कि अब तो **कर्मों की अवधि** पूरी हो गई है। तू पहले भी यहीं थी लेकिन तू अब बोली है इसलिए तेरा नाम गोरखमुंडी हो गया। आम फोड़े–फुन्सियों की जो दवाईयां बनती हैं, उनमें ज्यादातर गोरखमुंडी नाम की इस बूटी का ही इस्तेमाल किया जाता है।

जब हम अपने कर्मों का भुगतान करते हुए कोई भी समस्या लेकर डॉक्टर के पास जाते हैं, डॉक्टर की हमारे साथ पूरी हमदर्दी होती है। कोई डॉक्टर यह नहीं चाहता कि मेरा मरीज ठीक न हो, डॉक्टर तन–मन से चाहता है कि मेरा मरीज जल्दी तंदरूस्त हो और मुझे यश मिले।

कई बार ऐसा होता है कि अभी हमारे कर्म बाकी होते हैं तो डॉक्टर अपनी पूरी कोशिश के बावजूद भी हमें ठीक नहीं कर पाता, उसमें

डॉक्टर का दोष नहीं होता। हमें ऐसे टाईम पर डॉक्टर में दोष नहीं निकालना चाहिए। यह हमारे कर्मों का ही दोष होता है इसलिए डॉक्टर उसमें कुछ भी नहीं कर सकता।

दुख के समय हमें गुरु से माफी माँगनी चाहिए कि गुरु हमें बक्श दे। बीमारी में ईलाज पर जो पैसा खर्च होता है उससे थोड़ा बहुत कर्मों का भुगतान होता है और कुछ भुगतान करने के लिए हमें उसका दर्द भी सहन करना पड़ता है।

बुरे समय में गुरु हमारी मुनासिब मदद तो करते ही हैं लेकिन हमें सब्र भी करना चाहिए और ऐसे समय में हमें अपने गुरु पर पूरा भरोसा रखते हुए अपने कर्मों का भुगतान कर लेना चाहिए। हम गुरु के पास भजन–सिमरन का रास्ता सीखकर मोक्ष की प्राप्ति के लिए आते हैं।

***

सतसंगों के कार्यक्रमों की जानकारी

## धन्य अजायब

**सन्तबानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर (श्री गंगानगर) में सतसंग के कार्यक्रम**

| | | |
|---|---|---|
| 01, 02 व 03 | दिसम्बर | 2023 |
| 31 जनवरी 04 | फरवरी | 2024 |

**मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रम**

| | | |
|---|---|---|
| 03 | से | 07 जनवरी 2024 |

RNI No - RAJHIN/2003/9899
Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Nov. 2023
Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Nov. 2023

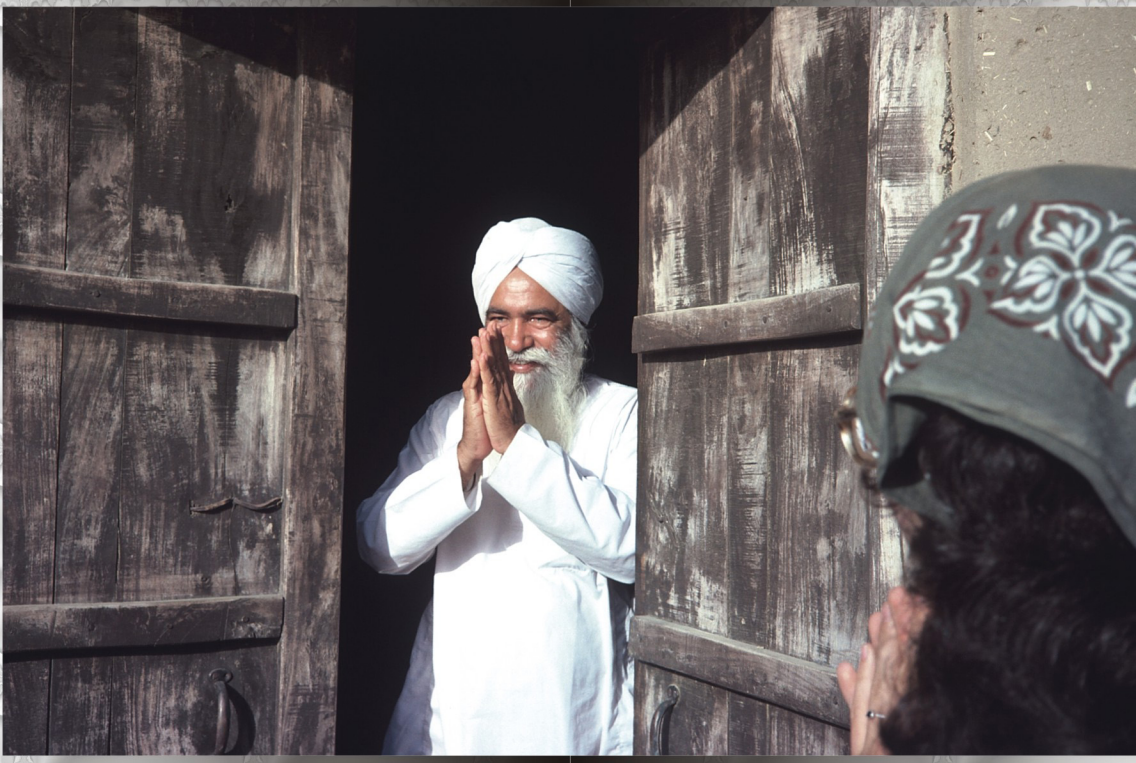

जो गुरुमुखों की संगत में आ जाते हैं, उनसे नाम लेकर जप लेते हैं, वे जन्म-मरण के दुखों से हमेशा के लिए बच जाते हैं।